 ISBN: 978-81-981913-6-6

7 स्वामी विवेकानंद और खेतड़ीः एक आध्यात्मिक अनुबंध

विरेन्द्र कुमार चान्देला*
शोधार्थी, ज्योती विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर।

***Corresponding Author:** virendra1982jj@gmail.com

सार

19वीं सदी का उत्तरार्द्ध भारत में सामाजिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण काल था। इसी दौर में स्वामी विवेकानंद और राजस्थान की प्रतिष्ठित खेतड़ी रियासत के राजा अजीत सिंह बहादुर के मध्य स्थापित मैत्री भारत के वैचारिक इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह संबंध साधु–राजा की पारंपरिक परिधि से आगे बढ़कर दो दूरदर्शी, मानवतावादी तथा आध्यात्मिक व्यक्तित्वों के पारस्परिक सम्मान और विचार–सहभागिता का अनोखा उदाहरण बन जाता है। स्वामी विवेकानंद के बार–बार खेतड़ी प्रवास, उनके द्वारा राजा को लिखे गए पत्र, तथा राजा अजीत सिंह द्वारा प्रदान किया गया नैतिक, बौद्धिक और आर्थिक सहयोग सबने विवेकानंद के चिंतन को नई दिशा तथा विश्व–धर्म सम्मेलन की तैयारी को आवश्यक आधार प्रदान किया। खेतड़ी में उनके निवास, अध्ययन, साधना और संवाद ने उनके विचारों को गहराई दी और "विवेकानंद" नाम भी इसी भूमि से उदित हुआ। यह शोध इस ऐतिहासिक संबंध की प्रकृति, उसके सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव तथा आधुनिक भारत में उसकी प्रासंगिकता को विश्लेषित करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि धर्म और सत्ता के समन्वय, युवा मार्गदर्शन, शिक्षा–सेवा के आदर्श तथा सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में खेतड़ी–विवेकानंद संबंध आज भी प्रेरणास्रोत और पथप्रदर्शक है।

शब्दकोशः आध्यात्मिकता मानवतावाद, विश्व धर्म सम्मेलन, सामाजिक सुधार, युवाप्रेरणा, सांस्कृतिक संरक्षण, समाज–सुधारक आंदोलन, राष्ट्रीय चेतना, आध्यात्मिक नेतृत्व, ऐतिहासिक प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

19वीं सदी का अंतिम चरण भारतीय इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तनकाल था। एक ओर अंग्रेजी शासन का प्रभाव तीव्र गति से बढ़ रहा था, तो दूसरी ओर भारतीय समाज अपने आत्मबोध, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की ओर अग्रसर था। इसी वातावरण में स्वामी विवेकानंद जैसे तेजस्वी संन्यासी का उदय हुआ, जिन्होंने भारतीय चिंतन, वेदांत और मानवतावाद को नई दिशा देकर देश की सुप्त ऊर्जा को जगाया। इसी कालखंड में राजस्थान की खेतड़ी रियासत के राजा अजीत सिंह बहादुर एक प्रजाहितैषी, दूरदर्शी और आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाले शासक के रूप में प्रतिष्ठित थे, जिनका दरबार विद्वानों, संतों और विचारकों के सम्मान के लिए प्रसिद्ध था।

स्वामी विवेकानंद और राजा अजीत सिंह की पहली भेंट संयोग से आबू में हुई, परंतु यह मिलन एक गहन और ऐतिहासिक मित्रता में बदल गया। यह संबंध न तो पारंपरिक गुरु–शिष्य का था और न ही केवल साधु–राजा काय यह दो समान विचारधारा वाले व्यक्तित्वों के आपसी सम्मान, वैचारिक आदान–प्रदान और राष्ट्रहित की साझा चिंता पर आधारित था। राजा की दूरदृष्टि और स्वामीजी की आध्यात्मिक तेजस्विता ने इस मैत्री को अद्वितीय बना दिया। स्वामीजी के तीनों खेतड़ी प्रवास, राजा द्वारा दी गई प्रेरणादायक सहायता, तथा "विवेकानंद" नामकरण इन सब ने स्वामीजी के जीवन और मिशन को निर्णायक आधार प्रदान किया।

खेतड़ी में स्वामीजी ने न केवल अध्ययन, संवाद और चिंतन द्वारा अपने विचारों को गहराने का अवसर पाया, बल्कि समाज, शिक्षा और मानवता के प्रति अपने दृष्टिकोण को अधिक सुस्पष्ट भी किया। आज के परिप्रेक्ष्य में यह संबंध धर्म और शासन के संतुलित सहयोग, युवा प्रेरणा, शिक्षा–सेवा के आदर्श तथा सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण जैसे अनेक आधुनिक प्रश्नों पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन देता है।

खेतड़ी और विवेकानंदः आध्यात्मिक चेतना व राजधर्म का अनूठा समन्वय

यह भारत की परंपरा रही है कि जब कोई सच्चा संत और कोई धर्मनिष्ठ राजा आपस में जुड़ते हैं, तो समाज को नई दिशा मिलती है। संत अपनी आध्यात्मिक दृष्टि से लोगों के मन को साफ करते हैं, और राजा अपनी समझदारी व धर्मपरायणता से राज्य और समाज को सही रास्ता दिखाता है। ऐसा ही अद्भुत रिश्ता स्वामी विवेकानंद और राजस्थान के खेतड़ी रियासत के राजा अजीत सिंह के बीच बना था।

स्वामी विवेकानंद, जिनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में नरेंद्रनाथ दत्त के रूप में हुआ, बचपन से ही तेजस्वी, जिज्ञासु और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। 19वीं सदी के भारत में उन्होंने अध्यात्म को नई सोच और नए नजरिए से दुनिया के सामने रखा। वे केवल साधु नहीं थे, बल्कि एक ऐसे विचारक थे जिन्होंने भारत की आत्मा को दुनिया तक पहुँचाया। उनके जीवन की यात्रा में खेतड़ी एक बहुत खास स्थान रखता है, क्योंकि यहीं से उनके जीवन को नई दिशा और ताकत मिली।

खेतड़ी रियासत भले ही आकार में छोटी थी, लेकिन संस्कृति, कला, विचार और साहित्य के मामले में बहुत समृद्ध थी। यहाँ के राजा अजीत सिंह बहादुर उदार ह्रदय, आध्यात्मिक रुचि वाले, और विद्वानों के आदरकर्ता शासक थे। जब स्वामी विवेकानंद यहां पहुंचे, तो राजा अजीत सिंह उनके व्यक्तित्व, ज्ञान और देश के प्रति समर्पण से बेहद प्रभावित हुए। धीरे–धीरे दोनों में गहरी मित्रता और आत्मीयता का संबंध बन गया।

इसी खेतड़ी में नरेंद्रनाथ को 'विवेकानंद' नाम मिला था। यही वह स्थान है जहाँ से उन्हें अमेरिका के शिकागो में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में जाने की प्रेरणा और आर्थिक सहायतामिली। यहीं से उनकी विश्व–यात्रा की शुरुआत हुई और भारत का नाम दुनिया में नई चमक के साथ उभरा।

इस तरह एक साधु और एक राजा का यह संबंध केवल व्यक्तिगत नहीं था, बल्कि यह भारत की उस पुरानी परंपरा को फिर से जीवंत करता है, जिसमें सत्ता और साधना मिलकर समाज और मानवता के कल्याण का मार्ग बनाते हैं। खेतड़ी और विवेकानंद का यह रिश्ता आज भी हमारी संस्कृति में प्रेरणा का स्रोत बनकर चमकता है।

19वीं सदी का आखिरी दौर भारत के लिए बड़े बदलावों का समय था। एक तरफ अंग्रेजी हुकूमत का दखल बढ़ रहा था, तो दूसरी तरफ भारतीय समाज अपनी खोई हुई पहचान को फिर से पाने की कोशिश में लगा था। इसी समय स्वामी विवेकानंद जैसे तेजस्वी युवा संन्यासी का उदय हुआ, जिन्होंने देश को नई सोच, नया आत्मविश्वास और अपनी संस्कृति पर गर्व करना सिखाया। इसी दौर में राजस्थान की खेतड़ी रियासत के राजा अजीत सिंह बहादुर भी एक समझदार, धार्मिक और प्रजाहितैषी शासक के रूप में जाने जाते थे। वे राजकाज के साथ–साथ आध्यात्मिक विषयों, संतों की संगति, साहित्य और संगीत में भी गहरी रुचि रखते थे। उनके दरबार में विद्वानों, साधुओं और विचारवान लोगों का हमेशा सम्मान होता था।

स्वामी विवेकानंद और राजा अजीत सिंह की पहली मुलाकात बिल्कुल संयोग से हुई। स्वामीजी अपने देशाटन पर निकले हुए थे और राजस्थान के मार्ग से होते हुए आबू पहुँचे। शुरू में राजा ने उन्हें एक सामान्य साधु की तरह ही देखा, लेकिन जैसे ही बातचीत आगे बढ़ी, वे उनकी तेजस्विता, तर्कशीलता और वेदांत की गहरी समझ से चकित रह गए। स्वामीजी की बातों में राष्ट्र की वेदना, समाज की समस्याओं और भारत के भविष्य की साफ झलक मिलती थी। यहीं से दोनों के बीच एक अनोखी मित्रता की शुरुआत हुई। यह न गुरु–शिष्य का संबंध था और न ही सिर्फ साधु–राजा का। यह दो समझदार, दूरदर्शी और आध्यात्मिक रूप से गहरे व्यक्तित्वों की सच्ची मैत्री थी। दोनों एक–दूसरे के विचारों का सम्मान करते थे और एक–दूसरे की संगति से प्रेरणा पाते थे। यही आत्मीयता आगे चलकर भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गई।

स्वामी विवेकानंद और राजा अजीत सिंह की मित्रता कई खूबसूरत गुणों से भरी हुई थी। सबसे पहले, दोनों की सोच बेहद मानवतावादी थी। वे जात–पात, ऊँच–नीच और किसी भी तरह के भेदभाव को गलत मानते थे। उनके आपसी पत्रों और बातचीत में इंसानियत की वही

साफ और उदार सोच दिखाई देती है। दूसरा बड़ा पहलू था भविष्यदृष्टि। राजा अजीत सिंह ने बहुत पहले ही समझ लिया था कि स्वामी विवेकानंद सिर्फ एक साधु नहीं, बल्कि भारत को दुनिया में नई पहचान दिलाने वाले महापुरुष हैं। वे स्वामीजी की प्रतिभा और उनके मिशन को दिल से समझते और समर्थन करते थे। तीसरी बात उनकी निरंतरता है। स्वामीजी तीन बार खेतड़ी आए और हर बार राजा के साथ लम्बी चर्चाएँ हुईं। खेतड़ी से बाहर रहने पर भी उन्होंने राजा अजीत सिंह को 40 से अधिक पत्र लिखे। इन पत्रों में भावनाएँ, दर्शन, समाज की समस्याएँ और दोनों के बीच की आत्मीयता साफ झलकती है। चौथी और बहुत महत्वपूर्ण बात यह थी कि राजा अजीत सिंह ने स्वामी विवेकानंद को हर तरह का सहयोग दिया। चाहे कपड़े हों, यात्रा का खर्च, पासपोर्ट और टिकट की व्यवस्था हो, या विदेश जाने की तैयारी हों राजा अजीत सिंह ने हर कदम पर उनका साथ निभाया। यह सिर्फ आर्थिक मदद नहीं थी, बल्कि स्वामीजी के आत्मविश्वास को मजबूत करने वाली आध्यात्मिक और नैतिक सहायता भी थी। अंत में सबसे उल्लेखनीय बात "विवेकानंद" नाम। यह नाम स्वयं राजा अजीत सिंह ने दिया था। इसी नाम के साथ स्वामीजी दुनिया के मंच पर पहुँचे और भारत की आध्यात्मिक शक्ति का संदेश पूरी दुनिया तक पहुँचाया। इस तरह, यह मित्रता न सिर्फ व्यक्तिगत थी, बल्कि भारत के इतिहास को दिशा देने वाली प्रेरणा भी बनी।

स्वामी विवेकानन्द और राजा अजितसिंहः दो कवियों और दो संगीतोत्साहियों का दिव्य मिलन

मनुष्य के जीवन में संगीत का प्रभाव अत्यन्त अद्भुत और चमत्कृत करने वाला होता है। यह मन की चंचलता को एक क्षण में थाम लेता है और आत्मा को एकाग्रता का वरदान प्रदान करता है। तामसिक प्रवृत्ति वाला मनुष्य भी, जो सामान्यतः अपने विचारों को नियंत्रित नहीं कर पाता, मनोहर संगीत के स्पर्श मात्र से मुग्ध, शान्त और एकाग्र हो जाता है। संगीत में वह अनोखी शक्ति है जो ऐहिक दृष्टि वाले मनुष्य को भी क्षणभर में दिव्यता के अनुभव तक पहुँचा देती है। यही कारण है कि ईश्वरीय चिंतन और आध्यात्मिक मनन के लिए संगीत को सर्वोत्तम सहायक माना गया है। इस भाव को भगवान् विष्णु ने देवर्षि नारद से भी इस प्रकार कहा है–

"नाहं तिष्ठामि वैकुण्ठे, योगिनांहृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्तिकृतत्र तिष्ठामि नारद"

अर्थात्कृहे नारद! मैं न तो वैकुण्ठ में रहता हूँ, न योगियों के हृदय मेंय अपितु जहाँ मेरे भक्त प्रेमपूर्वक मेरा गुणगान करते हैं, वहीं मेरा निवास है।

इसी संगीत–समाधि के मार्ग पर चलने वाले दो विलक्षण महापुरुष थे स्वामी विवेकानन्द और खेतड़ी के राजा अजितसिंह। एक सन्यासीकृपरंतु अनुपम संगीतज्ञय दूसरा राजसी व्यक्तित्वकृ किन्तु भक्तिभाव और संगीत–रस का शिरोमणि। दोनों की संगीत–साधना दिव्य भाव से ओत–प्रोत थी। जब वे खेतड़ी में साथ रहे, तब संगीत ने संपूर्ण वातावरण को आध्यात्मिक, सौम्य और पावन बना दिया। ऐसा प्रतीत होता था मानो खेतड़ी किसी दिव्य लोक की प्रतिध्वनि बन गई हो।

स्वामी विवेकानन्द बचपन से ही संगीत–प्रेमी थे। उन्होंने अहमद खाँ, बेनी गुप्त तथा कई प्रख्यात संगीताचार्यों से भारतीय शास्त्रीय संगीत का अभ्यास किया। वे बंगला, हिन्दी, उर्दू और फारसी में पद–गायन में दक्ष थे। उनके स्वर की मधुरता श्रोताओं को सहज ही मोहित कर लेती थी। केवल गायक ही नहीं, वे मृदंग, तबला तथा अन्य तारवाद्यों के भी कुशल वादक थे। उनका संगीत उच्च कोटि की साधना का परिणाम था, जिसमें भाव और तकनीक दोनों का अद्भुत समन्वय दिखता था।

दूसरी ओर राजा अजितसिंह भी अत्यन्त प्रखर संगीतज्ञ थे। बाल्यावस्था में ही उन्होंने ब्रजमण्डल के सुप्रसिद्ध गायक एवं वीणा–वादक भोपसिंह से संगीत शिक्षा प्राप्त की। भोपसिंह की स्वर–माधुरी का प्रभाव राजा पर गहन पड़ा और शीघ्र ही वे स्वयं भी गीत–गायन एवं वीणा–वादन में निपुण हो गए। तत्पश्चात् उन्होंने उस्ताद मुशर्रफ खाँ से सितार की शिक्षा ली, जो भारतवर्ष के श्रेष्ठ वीणा–वादकों में गिने जाते थे। मुशर्रफ खाँ न केवल राजा के आश्रित गुणी थे, बल्कि अखिल भारतीय संगीत–सम्मेलनों में उनकी कला को विशेष सम्मान प्राप्त हुआ था। राजा अजितसिंह की प्रेरणा से ही वे पेरिस के एक अंतरराष्ट्रीय संगीत–सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर आए जिसका प्रबंध पंडित मोतीलाल नेहरू के आग्रह पर हुआ था।

संगीत–प्रेम के साथ–साथ दोनों ही कविता–रचना में भी रुचि रखते थे। स्वामी विवेकानन्द और राजा अजितसिंहकृदोनों के लिखे हुए अनेक गीत उस समय खेतड़ी में गूंजा करते थे। उनका प्रथम मिलन 4 जून 1891 को माउंट आबू में हुआ। यह मिलन संगीत या कविता के कारण नहीं, बल्कि धर्म और ज्ञान की प्रतीति के कारण हुआ। स्वामीजी ज्ञान के आगार थे और राजा अजितसिंह आध्यात्मिक ज्ञान के अन्वेषी। प्रथम भेंट में ही दोनों के मध्य धर्म, दर्शन और आध्यात्मिकता पर गहन संवाद प्रारम्भ हुआकृऔर शीघ्र ही वह संवाद संगीत की दिव्य युगलबंदी में परिवर्तित हो गया।

कभी दोनों एक साथ गातेय कभी एक गाता और दूसरा तबला या मृदंग से संगत करता। कभी राजा अजितसिंह वीणा बजाते और स्वामीजी मृदंग पर लय बाँधते। कई अवसरों पर उस्ताद मुशर्रफ खाँ भी सम्मिलित हो जाते। यह संगीत–साधना माउंट आबू से प्रारम्भ होकर खेतड़ी में भी निरंतर चलती रही और दोनों के मिलन ने खेतड़ी को एक अनुपम आध्यात्मिक–मंगलभूमि बना दिया।

राजा अजितसिंह कवि भी थे और उनके अनेक गीत स्वामीजी को अत्यन्त प्रिय थे। दोनों कई गीतों का गायन करते, किन्तु तीन गीत विशेष रूप से उनके हृदय को स्पर्श करते थेकृ जिनमें दो भक्त–सूरदास के और तीसरा राजा अजितसिंह द्वारा रचित था। सूरदास का सबसे प्रिय पद था

"हमारे प्रभु औगुन चित न धरो,
समदरसी है नाम तिहारो, अब मोहि पार करो।"

इस पद का आशय अत्यन्त मधुर और भक्तिस्पर्शी है। सूरदास विनयपूर्वक निवेदन करते हैं कि हे प्रभु! हमारे दोषों को मन में स्थान न दें। आप समदर्शी हैंकृगुण–अवगुण का भेद नहीं करते। मानव स्वभावतः दुर्बल है, इसीलिए ईश्वर का अनुग्रह उसे पवित्र कर देता है।

इन्हीं भावों के कारण सूरदास का यह गीत स्वामी विवेकानन्द और राजा अजितसिंह दोनों के लिए आध्यात्मिक उल्लास का स्रोत था। जब वे इसे साथ मिलकर गाते थे, तब वातावरण भक्तिरस और दिव्य अनुभूति से भर जाता था।

स्वामी विवेकानन्द और राजा अजितसिंह का यह संगीत–सम्पर्क मात्र कलात्मक मिलन नहीं था यह दो उच्च आत्माओं का संगम था, जिसमें अध्यात्म, काव्य, संगीत और ज्ञान एक ही धारा में प्रवाहित हो उठे थे। इन दोनों महापुरुषों की संगति ने खेतड़ी को अद्भुत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ऊँचाई दी, जिसकी स्मृति आज भी इतिहास के पृष्ठों में जीवित है।

खेतड़ी में स्वामी विवेकानंद का निवास, शिक्षाएँ और उसका प्रभाव

खेतड़ी स्वामी जी के लिए सिर्फ एक ठहरने की जगह नहीं था, बल्कि वह धरती थी जहाँ उनकी सोच, साधना और आत्मचिंतन को नई दिशा मिली। यहाँ का शांत वातावरण, राजमहल की गरिमा, विद्वानों की संगति और राजा अजीत सिंह का आत्मीय व्यवहार इन सबने स्वामीजी को नई ऊर्जा, आत्मविश्वास और गहराई दी। खेतड़ी ने उनके विचारों को विस्तार दिया और समाज से जुड़कर काम करने की प्रेरणा भी दी।

स्वामी विवेकानंद कुल तीन बार खेतड़ी आए। पहली मुलाकात 4 जून 1891 को आबू में हुई, जब राजा अजीत सिंह गर्मियों में वहाँ अपने खेतड़ी महल में ठहरे हुए थे। साधारण वेशभूषा में सामने आए इस युवा संन्यासी की तेजस्विता ने राजा को पहली ही भेंट में प्रभावित कर दिया। राजाजी बार–बार उनसे मिलने लगे और धार्मिक व सामाजिक विषयों पर लम्बी बातचीत होने लगी। आबू से लौटते समय राजा अजीत सिंह स्वयं आग्रह करके स्वामीजी को अपने साथ खेतड़ी ले आए। स्वामी विवेकानंद पहली बार 7 अगस्त 1891 को खेतड़ी पहुँचे। इस प्रवास में दोनों के बीच गहन चर्चा हुई। स्वामीजी ने खेतड़ी के विद्वान राजपंडित नारायण दास जी से अष्टाध्यायी और महाभाष्य जैसे गूढ़ व्याकरण ग्रंथों का अध्ययन किया। स्वामीजी उन्हें गुरु के समान सम्मान देते थे। इसी दौरान राजा अजीत सिंह ने स्वामीजी से विज्ञान और कानून के विषयों की भी जानकारी ली। स्वामीजी इस प्रथम प्रवास में 27 अक्टूबर 1891 तक खेतड़ी में रहे। उनका दूसरा आगमन 21 अप्रैल 1893 को उस समय हुआ जब राजा अजीत सिंह के पुत्र का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। इस बार भी स्वामीजी का बहुत सम्मान किया गया। कुछ दिन रुकने के बाद वे 31 मई 1893 को मुंबई से अमेरिका के लिए रवाना हुए। उनकी शिकागो यात्रा के लिए टिकट, कपड़े और अन्य व्यवस्थाएँ राजा अजीत सिंह ने ही करवायीं। शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में अद्भुत सफलता प्राप्त करने के बाद भी स्वामीजी और राजा के बीच निरंतर पत्राचार चलता रहा। उनका तीसरा और अंतिम आगमन 12 दिसंबर 1897 को हुआ। इस बार उनका स्वागत पहले से भी अधिक भव्य रूप में किया गया। वे 21 दिसंबर 1897 तक खेतड़ी में ठहरे।

हर बार वे राजा अजीत सिंह के अतिथि थे और राजमहल के विवेकानंद निवास में ठहरते थे। यहाँ उन्होंने अनेक प्रेरणादायक बातें कही, चिंतन किया और कई महत्वपूर्ण पत्र लिखे। महल का शांत माहौल, उद्यानों की नीरवता और विद्वानों–साधुओं की संगत ने उनके मन को स्थिर किया। खेतड़ी में उन्होंने न केवल राजा अजीत सिंह, बल्कि वहाँ के पंडितों, दरबारियों और साधकों को भी अपने ज्ञान और आध्यात्मिकता से लाभान्वित किया। इस प्रकार खेतड़ी स्वामी विवेकानंद की साधना, विचार और जीवनयात्रा का एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गया।

खेतड़ी में स्वामी विवेकानंद ने जो शिक्षाएँ दीं, वे आज भी लोगों के दिलों में बसती हैं। उन्होंने यहाँ बार–बार समझाया कि धर्म केवल पूजा–पाठ या रीति–रिवाजों तक सीमित नहीं है, बल्कि अच्छा जीवन जीने का मार्ग है। वेदांत के अद्वैत दर्शन को वे बहुत सरल भाषा में बताते थे। हर इंसान में ईश्वर का अंश है और हमें हर व्यक्ति को उसी भावना से देखना चाहिए। नारी सम्मान पर स्वामीजी की सोच बेहद स्पष्ट थी। वे कहते थे कि भारत तभी आगे बढ़ेगा जब उसकी बेटियाँ पढ़–लिखकर आत्मनिर्भर बनेंगी। खेतड़ी में राजा अजीत सिंह और अन्य लोगों के साथ उनकी चर्चाओं में यह विषय कई बार आया। इसी तरह उन्होंने सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म बताया। "गरीब, दुखी और जरूरतमंद की सेवा ही सच्ची पूजा है"। यह संदेश उन्होंने खेतड़ी दरबार में कई बार दोहराया। आगे चलकर रामकृष्ण मिशन की गतिविधियाँ इसी सोच पर आधारित हुईं।

स्वामीजी ने धर्म और विज्ञान को एक–दूसरे का विरोधी नहीं माना। खेतड़ी में उन्होंने युवाओं को यह सीख दी कि आधुनिक शिक्षा और आध्यात्मिकता को साथ लेकर चलना चाहिए। वे कहते थे कि ऐसे युवाओं की जरूरत है जो वेदांत के सिद्धांतों को विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ सकें और देश का निर्माण करें। स्वामी विवेकानंद की इन शिक्षाओं का खेतड़ी पर गहरा प्रभाव पड़ा। राजा अजीत सिंह ने कई सामाजिक और जनहित के कार्य शुरू किए। दरबार के अधिकारी और आम लोग भी स्वामीजी के संपर्क से प्रेरित होकर समाजसेवा की ओर बढ़े।

स्वामी विवेकानंद के लिए खेतड़ी कोई साधारण ठहराव नहीं था। यह उनके लिए एक ऐसी जगह बनी जहाँ उनके विचारों को नया आकार मिला, उनकी सोच और भी गहरी हुई और उन्हें समाज व राष्ट्र के लिए काम करने की ठोस दिशा मिली। खेतड़ी ने उन्हें केवल सम्मान नहीं दिया, बल्कि वह आत्मविश्वास भी दिया जिसकी चमक आगे चलकर उनके मशहूर शिकागो भाषणों और रामकृष्ण मिशन की स्थापना में दिखाई दी। खेतड़ी ने उनके राष्ट्रचिंतन की नींव मजबूत की और उनके आध्यात्मिक मिशन को गति दी। आज भी खेतड़ी के लोग स्वामीजी के आगमन को गर्व की गाथा मानते हैं। 12 दिसंबर का दिन खेतड़ी में खास तौर पर याद किया जाता है, क्योंकि 1897 में शिकागो धर्म सम्मेलन से लौटने के बाद स्वामी विवेकानंद इसी दिन खेतड़ी आए थे। पूरे नगर ने घी के दीयों से उनका स्वागत किया था। उसी याद में आज 'विरासत दिवस' मनाया जाता है। खेतड़ी का विवेकानंद स्मारक, संग्रहालय और हर साल लगने वाला विवेकानंद मेला हजारों लोगों को उनकी शिक्षा और विचारों से जोड़ता है।

शिकागो धर्म महासभा की सफलता की कहानी में भी खेतड़ी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। 1893 में अमेरिका के शिकागो में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेना केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा को दुनिया तक पहुँचाने का अवसर था। स्वामी विवेकानंद को इस यात्रा के लिए जो प्रेरणा, भरोसा, आर्थिक मदद और तैयारी मिली। वह सब राजा अजीत सिंह बहादुर की वजह से संभव हुआ। राजा ने उन्हें टिकट, पासपोर्ट, वस्त्र और आवश्यक सामान की व्यवस्था करवाई और सबसे बड़ी बात उन्हें वह मानसिक बल दिया जिसकी बदौलत स्वामीजी आत्मविश्वास के साथ दुनिया के सामने भारत की आध्यात्मिक धरोहर प्रस्तुत कर सके।

इस तरह, खेतड़ी न केवल स्वामी विवेकानंद के जीवन की दिशा बदलने वाला पड़ाव था, बल्कि भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को विश्व मंच तक पहुँचाने वाला एक महत्वपूर्ण आधार भी सिद्ध हुआ। राजा अजीत सिंह स्वामी विवेकानंद के लिए केवल एक संरक्षक भर नहीं थे, बल्कि एक ऐसे सच्चे मित्र और सहायक थे जिन्होंने स्वामीजी की जीवन दिशा ही बदल दी। जब विवेकानंद अमेरिका जाने को लेकर असमंजस, संकोच और तरह–तरह की परेशानियों में उलझे हुए थे, तब राजा अजीत सिंह ने उन्हें पूरा हौसला दिया। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि राजा अजीत सिंह ने ही उन्हें "विवेकानंद" नाम दिया, जो आगे चलकर उनकी पहचान पूरी दुनिया में बना। 'विवेक' यानी ज्ञान और 'आनंद' यानी सुख। यह नाम उनके व्यक्तित्व पर बिल्कुल खरा उतरता था।

शिकागो यात्रा की असली तैयारी भी खेतड़ी में ही शुरू हुई। यहीं रहते हुए स्वामीजी ने विदेश, वहाँ के समाज और धर्म–दर्शन की प्रकृति के बारे में चर्चा की। उन्होंने यह तय किया कि वे भारत के धर्म को केवल पूजा–पाठ की परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक जीवन–दर्शन के रूप में दुनिया के सामने रखेंगे। खेतड़ी का वातावरण यहाँ के विद्वान, संस्कृति और राजा का प्रोत्साहन स्वामीजी को वैचारिक शक्ति और आत्मविश्वास देता रहा। खेतड़ी में ही उनकी सोच वैश्विक दृष्टि से जुड़ने लगी। शिकागो पहुँचने के बाद भी स्वामी विवेकानंद खेतड़ी को नहीं भूले। उन्होंने राजा अजीत सिंह को जो पत्र लिखे, उनमें साफ लिखा कि–"यदि आपका प्रेम और प्रेरणा न होती, तो मैं अमेरिका में भारत की आवाज नहीं पहुँचा पाता।" इन पत्रों से स्पष्ट होता है कि खेतड़ी उनके लिए सिर्फ एक महल या ठहरने की जगह नहीं थी, बल्कि एक ऐसा केंद्र था जहाँ से उन्हें आध्यात्मिक ऊर्जा और राष्ट्रधर्म की प्रेरणा मिली।

अंत में कहा जाए तो विश्व धर्म महासभा में स्वामी विवेकानंद की गूंजती हुई सफलता केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं थी, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक विजय थी। और इस विजय की पृष्ठभूमि में राजस्थान के छोटे से ठिकाने खेतड़ी और इसके विद्वान राजा अजीत सिंह का अद्भुत योगदान था। यह मिसाल है कि जब एक राजा और एक संन्यासी मानवता की भलाई के लिए एक साथ खड़े हों, तो इतिहास में नए अध्याय लिखे जाते हैं।

खेतड़ी–विवेकानंद संबंध की आज के समय में अहमियत–

स्वामी विवेकानंद और खेतड़ी के राजा अजीत सिंह बहादुर के बीच जो आत्मिक रिश्ता बना था, वह कोई मामूली घटना नहीं थी। यह ऐसा संबंध था जिसने धर्म और शासन दोनों को

मिलकर समाज के भले के लिए एक दिशा दी। आज भी यह रिश्तेदारी हमें बताती है कि जब एक संत और एक शासक सही सोच के साथ साथ आएँ, तो देश और समाज के लिए बड़ी से बड़ी राहें खुल सकती हैं।

- **धर्म और सत्ता का मेल आज के लिए बड़ी सीख**

आज के समय में अक्सर धर्म और राजनीति को दो अलग–अलग रास्ते मान लिया जाता है। लेकिन विवेकानंद और राजा अजीत सिंह का उदाहरण दिखाता है कि जब आध्यात्मिक सोच और राजकीय सहयोग एक दिशा में हों, तो समाज में बड़ा और अच्छा बदलाव संभव है। राजा अजीत सिंह ने कभी यह नहीं चाहा कि विवेकानंद उनका प्रचार करें या उनके नाम का बखान करें। उन्होंने तो बस स्वामीजी को खुला आसमान दिया कि वे देश और दुनिया के लिए काम करें। यह बात आज के नेताओं और धार्मिक गुरुओं दोनों के लिए एक आदर्श उदाहरण है।

- **युवाओं के लिए प्रेरणा का मजबूत आधार**

विवेकानंद का खेतड़ी से जुड़ा जीवन आज भी युवाओं के लिए बड़ी प्रेरणा है। आज का युवा तनाव, असमंजस और चुनौतियों से घिरा है। ऐसे में खेतड़ी का यह प्रसंग बताता है कि सही मार्गदर्शन, धैर्य, मेहनत और अच्छा साथ मिल जाए, तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं रहता।खेतड़ी में बैठकर स्वामीजी ने अपने अंदर की शक्ति को पहचाना और यही संदेश युवाओं में जगाने की बात कही। आज की शिक्षा और युवा नीतियों में इस विचार को अपनाने की बहुत जरूरत है।

- **शिक्षा, सेवा और आत्मनिर्भरता तीनों का सुंदर मेल**

स्वामी विवेकानंद ने खेतड़ी में यह साफ कहा था कि शिक्षा केवल किताबों का ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र और जिम्मेदारी का निर्माण होना चाहिए। आज की पढ़ाई केवल नौकरी पाने तक सीमित हो गई है, पर विवेकानंद का विचार हमें याद दिलाता है कि सही शिक्षा वही है जो इंसान को आत्मनिर्भर बनाए और दूसरों की सेवा के लायक खड़ा करे। राजा अजीत सिंह ने स्वामीजी की मदद कर यह दिखाया था कि संसाधन किस तरह सही दिशा में उपयोग हों तो समाज को कितना बड़ा लाभ मिलता है। यह बात आज के दानदाताओं, समाजसेवी संस्थाओं और सरकार सबके लिए एक मार्गदर्शन है।

- **हमारी सांस्कृतिक धरोहरों को सँभालने की प्रेरणा**

खेतड़ी में विवेकानंद से जुड़े जो ऐतिहासिक स्थल हैं, वे आज सिर्फ घूमने की जगह नहीं, बल्कि देश की सोच और चेतना के प्रतीक हैं। इन जगहों का संरक्षण हमें यह सिखाता है कि इतिहास और संस्कृति को जीवित रखना ही असली सम्मान है। खेतड़ी में बने स्वामी विवेकानंद स्मारक हमें बार–बार याद दिलाते हैं कि यह भूमि उनके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पड़ावों में से एक थी।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद और खेतड़ी के राजा अजीत सिंह के बीच जो आत्मिक और गहरा संबंध बना था, वह किसी एक युग, जगह या पद की सीमाओं में नहीं बंधा। यह संबंध उस भारत का प्रतीक है जहाँ धर्म का अर्थ विवेक और सत्य होता है, और सत्ता का मतलब सेवा और जनहित होता है। दोनों एक–दूसरे के सहारे नहीं, बल्कि एक–दूसरे की शक्ति बनकर मानवता की भलाई के लिए साथ चलते हैं। आज जब भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, तब खेतड़ी और विवेकानंद की यह प्रेरणादायी कथा हमें फिर याद दिलाती है कि यदि मन में प्रेरणा हो, हाथ में सहयोग मिले और भीतर आत्मविश्वास बना रहे, तो किसी भी विचार को गाँव से उठाकर दुनिया तक पहुँचाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, पं. झाबरमल्ल (2016). खेतड़ी नरेश और विवेकानंद. जोधपुरः राजस्थानी ग्रन्थागार।
2. प्रकाश, टी. सी. (2002). खेतड़ी और स्वामी विवेकानंद. शिमलारू शेखावाटी कला, संस्कृति व इतिहास शोध संस्थान।
3. स्वामी विदेहात्मानन्द (2023). स्वामी विवेकानंद और राजस्थान. कलकत्ताः अद्वैत आश्रम।
4. रामकृष्ण मिशन संस्थान। स्वामी विवेकानंद रचनावली. बेलूर मठरू रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
5. स्वामी तपस्यानंद। Letters of Swami Vivekananda. चेन्नईः श्री रामकृष्ण मठ।
6. शर्मा, पं. झाबरमल्ल (2016). खेतड़ी का इतिहास. जोधपुरः राजस्थानी ग्रन्थागार।
7. (अनाम लेखक) (2019). खेतड़ी में स्वामी विवेकानंद और भक्त. प्रकाशक विवरण अनुपलब्ध।
8. राजस्थान पर्यटन विभाग। खेतड़ी स्मारक म्यूजियमः गाइड बुक. जयपुरः राजस्थान पर्यटन।

☯☯☯